भारत व स्पेन का साहित्य बेहद समृद्ध : के श्रीनिवास राव

नई दिल्ली (एसएनबी)। साहित्य अकादमी तथा भारत में मैक्सिको के दूतावास के सहयोग से आयोजित भारतीय मैक्सिकाई लेखक सम्मेलन में अकादमी के सचिव के. श्रीनिवासराव ने कहा कि दोनों देशों की संस्कृतियां बेहद प्राचीन है और दोनों के संबंध भी हमेशा से रहे हैं। दोनों देशों की भाषाओं में परस्पर अनुवाद के जरिए ही हम एक दूसरे के बीच संवाद स्थापित कर सकते हैं। दोनों ही देशों का प्राचीन साहित्य और स्वतंत्रता के बाद का साहित्य बेहद समृद्ध है और उसे विभिन्न विधाओं में बखूबी व्यक्त किया गया है। उन्होंने साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित स्पेनिश साहित्य की जानकारी देते हुए बताया कि दोनों देशों के बीच यह आदान-प्रदान लगातार चलता रहेगा। जेएनयू में स्पेनिश भाषा केन्द्र के अध्यक्ष रहे एसपी गांगुली ने दोनों देशों के बीच विभिन्न भाषाओं में अनुवाद की प्राचीन परंपरा की जानकारी देते हुए कहा कि भारत में एक हजार से ज्यादा भाषाएं होने के कारण यहां की अनुवाद प्रक्रिया पश्चिमी देशों से अलग है। उन्होंने बांग्ला और लैटिन अमेरिकी देशों के बीच अनुवाद की विशेष जानकारी देते हुए कहा कि बांग्ला कवियों शंख घोष से लेकर बुद्धदेव दास तक सभी वहां से प्रेरणा लेते रहे हैं और अनुवाद में भी सक्रिय रहे हैं।

साहित्य अकादमी की ओर से भारतीय मैक्सिकाई लेखक सम्मेलन आयोजित

भारत में मैक्सिको के राजदूत फेदेरिको सालास लोत्फे ने कहा कि मैं इस कार्यक्रम को सम्मेलन की जगह संवाद कहना चाहूंगा। इस संवाद में हम तय कर पाएंगे कि आने वाले समय में हमें दोनों देशों के बीच आगे क्या करना है। उन्होंने मैक्सिको के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि वहां चौसठ भाषाएं हैं और ये भाषाएं अपने अस्तित्व के लिए लड़ रही हैं। यूनेस्को द्वारा इस वर्ष को अंतर्राष्ट्रीय स्वदेशी भाषा वर्ष घोषित करने का जिक्र करते हुए कहा कि हमें इन भाषाओं को बचाने के लिए और महवपूर्ण काम करना है। मैक्सिको से आई कवियत्री नादिया लोपेज़ गार्सिया ने अपनी भाषा को बचाने में आ रही मुश्किलों का जिक्र करते हुए अपनी कुछ कविताओं को प्रस्तुत किया है।